

आनन्द कुमार

श्री बाज़र

ख़ज़ाने की चाबी



Copyrighted material

शेयर बाज़ारः खज्जाने की चाबी

खज्जाने की चाबी



eISBN: 978-93-5278-496-7

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.

X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II

नई दिल्ली-110020

फोन: 011-40712100, 41611861

फैक्स: 011-41611866

ई-मेल: ebooks@dpb.in

वेबसाइट: [www.diamondbook.in](#)

संस्करण: 2017

शेयर बाजार

लेखक: आनंद कुमार

अनुक्रमणिका

1. शेयर : परिचय
2. शेयर बाज़ार की जानकारी
3. शेयर का चयन
4. शेयर खरीद और बिक्री
5. अच्छी कम्पनियों का चयन
6. निवेश से संबंधित कुछ अन्य जानकारियां
7. म्यूचुअल फंड में निवेश
8. डिविडेंड रिइंवेस्टमेंट
9. एम्प्लॉय स्टॉक ऑप्शन प्लान के शेयर
10. आई.पी.ओ. में निवेश
11. मार्गन स्टेनली
12. शेयर और टैक्स
13. शेयर कर प्रावधान
14. शेयर के बदले ऋण
15. सही समय पर सही निवेश
16. शेयर : लाभ-ही-लाभ
17. जांच-परखकर करें निवेश
18. लाभ कमाने के तरीके
19. कम में खरीदो, ऊंचे में बेचो

20. पैसा झूबने से बचाने के सूत्र
21. उतार-चढ़ाव का इलाज
22. शेयर खरीद में सावधानियां
23. उपयोगी टिप्प
24. महत्वपूर्ण बातें

शेयर : परिचय

आज के भौतिकवादी जीवन में धन की महत्ता से इंकार नहीं किया जा सकता। धन साध्य ही न हो परंतु यह सबसे बड़ा साधन है। एक उच्च व्यक्ति से लेकर सामान्य व्यक्ति तक धन की इस महत्ती आवश्यकता को स्वीकार करता है। हर व्यक्ति विभिन्न माध्यमों से धन कमाने की जुगत करता है और उसे अपने भविष्य को सुरक्षित रखने को संग्रहीत भी करता है। धन संग्रह का एक माध्यम बैंकिंग प्रणाली भी है, जहां हमारा धन पूर्णतया सुरक्षित और संयमित रहता है, परंतु बैंकिंग व्यवस्था में धन की बढ़ोतरी उतनी तीव्रता से नहीं होती, जितनी तीव्रता वर्तमान की मांग है। ऐसे में हम अगर थोड़े से विवेक और जागरूकता के साथ अपने धन को विस्तृत क्षेत्र की ओर ले जाएं तो धन वर्तमान की मांग के अनुरूप ही विकास करता है और इसके लिए सबसे उचित और सुरक्षित क्षेत्र है शेयर बाज़ार।

यह जानने के लिए कि यह शेयर-बाज़ार है क्या? आइए, पहले हम यह जानते हैं कि शेयर क्या है? सामान्य बोलचाल की भाषा में जब हम शेयर की बात कर रहे होते

हैं, तो हमारा मतलब किसी कंपनी द्वारा अपने मूलधन को एक निश्चित अनुपात में बांटकर जारी किए गए हिस्से होता है, अर्थात् दूसरे शब्दों में शेयर का मूल अर्थ कारोबार में हिस्सेदारी है।

इसका सीधा और स्पष्ट अर्थ यह है कि जब आप किसी शेयर में निवेश कर रहे होते हैं, तब आप अपना धन बाज़ार के किसी सौदे को खरीदने में नहीं व्यय कर रहे होते हैं, अपितु एक संपूर्ण कारोबार में हिस्सेदारी हासिल कर रहे होते हैं। इस तरह आप अंशतः उस कंपनी के मालिक बन जाते हैं।

यह तो आप भी जानते हैं कि जब हम किसी कंपनी या कारोबार को संचालित करते हैं तब हमारे पास लाभ और हानि दोनों की समान संभावनाएं निहित होती हैं।

कैसे जारी होते हैं शेयर

सभी कंपनियां, जो शेयर जारी करती हैं, उसका एक तय मूल्य होता है, जो बाज़ार की भाषा में ‘तय वैल्यू’ या ‘पार वैल्यू’ कहा जाता है। यह मूल्य शेयर सर्टिफिकेट पर स्पष्टतः अंकित होता है। अमूमन भारत में यह तय वैल्यू 10 रुपए होती है, हालांकि कतिपय कम्पनियों ने अब इन्हें 5 रुपए, 2 रुपए व 1 रुपए तक के शेयरों में भी विभाजित करना शुरू कर दिया है। यह अंकित मूल्य कम्पनी के खाते में शेयर का सांकेतिक मूल्य होता है। बाद में यह

बाजार में किसी भी भाव पर खरीदा या बेचा जा सकता है।

यहाँ यह भी समझ लेना आवश्यक होगा कि बाजार में शेयर का भाव निरंतर चढ़ता या गिरता रहता है और उसका फेंस वैल्यू से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। परन्तु शेयरों पर डिविडेंड अर्थात् लाभांश शेयर की पार वैल्यू के आधार पर ही तय किया जाता है।

निवेश किसे कहते हैं?

मान लीजिए कि आपने अपने धन से किसी ज़मीन का टुकड़ा खरीदा, जिसका मूल्य उस समय 1000 रुपए है, रास्ते की परेशानी अथवा आसपास की जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए उक्त ज़मीन की कीमत में पांच वर्ष में मात्र दस प्रतिशत की वृद्धि हुई, अर्थात् उस ज़मीन की वर्तमान कीमत 1100 रुपए हो गई जबकि मुद्रास्फीति की वजह से मुद्रा का अवमूल्यन 15 प्रतिशत हुआ, अर्थात् आपके द्वारा लगाए गए धन का वर्तमान मूल्य 1150 रुपए हुआ। ऐसे में आप देखेंगे कि प्रत्यक्षतः तो आपके द्वारा लगाया गया धन हालांकि 100 रुपए बढ़ा, परंतु वर्तमान मुद्रा के आकलन के हिसाब से आप 50 रुपए के घाटे में हैं। अगर इस घटना को हम अर्थशास्त्र की भाषा में परिभाषित करें तो वह यह होगा कि मुद्रा का मौलिक मापदंड मूलतः उसके द्वारा खरीदी गई वस्तुओं अथवा सेवाओं से आंका जा सकता है। सीधे शब्दों में आप अपनी जमा पूँजी का जो उपयोग उस

पूंजी को स्थिर रखने या उसे बढ़ाने में उपयोग करते हैं, उसे निवेश कहा जाता है। चाहे आपने उसका उपयोग सोना, चांदी जैसे किसी धातु को खरीदने में किया हो अथवा ज़मीन, मकान आदि किसी अचल संपत्ति को खरीदने में।

चूंकि आप पूंजीधारक हैं, अतः अपनी पूंजी को स्थिर रखने अथवा उसे बढ़ाने के लिए आप उसका जो उपयोग कर रहे हैं, उसमें सर्वप्रथम आपके लिए यह निश्चित करना आवश्यक होता है कि आप अपनी जमा पूंजी का जो उपयोग कर रहे हैं, उसके साथ आपकी अपेक्षाएं क्या हैं। क्या आप निवेश से अपनी पूंजी में वृद्धि चाहते हैं, नियमित आय अथवा दोनों। परंतु अपनी अपेक्षाओं के साथ-साथ आपके लिए यह जांचना भी आवश्यक है कि भविष्य में आपकी आवश्यकताएं क्या हैं। यह जांच कर लेने से आप अपनी प्राथमिकताएं आसानी से तय कर पाएंगे और आपके सामने यह स्पष्ट हो सकेगा कि आप अपने निवेश पर कितनी वृद्धि और कितनी आय चाहते हैं। तब आपके सामने यह निर्णय लेना आसान हो जाएगा कि कौन-सा निवेश आपके लिए उपयुक्त है। बाज़ार को समझना और अपनी प्राथमिकताएं तय करना एक बेहतर निवेशक के लिए अति आवश्यक है और यह पूजी निवेश की कला है।

निवेश की आवश्यकता

अगर हम अपने वर्तमान से कुछ दशक पीछे जाएं और

20वीं सदी के मध्यवर्ती दशकों के बाज़ार पर ध्यान दें, तो हम पाएंगे कि तीस-चालीस के दशकों में बाज़ार में चीज़ों के मूल्य लगभग स्थिर रहते थे। अगर बाज़ार मूल्यों में थोड़ी-बहुत तेज़ी-मंदी आती भी थी, तो ऐसी नहीं कि वह हमारे रोज़मर्हा की ज़िंदगी पर कोई स्पष्ट प्रभाव डाल सके। यही कारण था कि तब हम आर्थिक असुरक्षा का बोध नहीं करते थे, परंतु धीरे-धीरे बाज़ार के स्वरूप में तब्दीली शुरू हुई और बाज़ार ने सामान्य उपभोक्तवादी संसार से निकलकर अपने कदम विश्व के विशिष्ट उपभोक्तावादी दुनिया की ओर रखे। साठ के दशक तक आते-आते बाज़ार मूल्यों में निरंतर वृद्धि होने लगी और रुपए का मूल्य गिरने लगा। परिणाम यह हुआ कि निश्चित आय वाला समुदाय (सामान्यतः उच्च-मध्यम वर्ग) अपनी आर्थिक सुरक्षा एकाएक गंवा बैठा। सत्तर और अस्सी के दशक में तो यह स्थिति बद से बदतर होती गई। विगत कुछ दशकों में उपभोक्ता दामों में 10 गुणा से अधिक वृद्धि हुई है। दूसरे शब्दों में कहें तो 60 के दशक में 1 रुपए की जो क्रय-क्षमता थी आज उसकी कीमत कुल 4 पैसे रह गई है। पिछले 40 वर्षों में मुद्रास्फीती का सालाना चक्रवृद्धि दर 7-8 प्रतिशत रहा है।

भूमंडलीकरण के इस वर्तमान परिवेश में अब मुद्रास्फीती अब अर्थव्यवस्था का एक आवश्यक है। अंतर केवल इतना है कि इसका दर कभी कम हो सकता है, तो कभी

अधिक। ऐसे में हम तीस के दशक में आर्थिक मापदंडों को कायम रखकर परंपरागत ढंग से मात्र वेतन, पेंशन अथवा एक दायरे में सिमटे कृषि संसाधनों से प्राप्त आय से अपना कदम वर्तमान व्यवस्था से मिलाकर चल सकेंगे, यह सोचना भी मात्र कल्पना ही है। ऐसे में अपने भविष्य को सुविधाजनक बनाने और सुरक्षित रखने के लिए हमारे लिए आवश्यक है कि हम अपने जमा धन की क्रय-क्षमता को बढ़ाने के लिए एक सुविधाजनक मार्ग की तलाश करें और उसका एक बेहतर उपाय है, अच्छा निवेश। ऐसा निवेश जिसमें हम न सिर्फ़ अपनी जमा राशि का मूल्य बढ़ा सकें, अपितु इस वृद्धि की मुद्रास्फीती की दर से भी अधिक भी रख सकें। अगर मुद्रास्फीती की दर 8 प्रतिशत है तो हम आदि काट कर आमदनी में 10-12 प्रतिशत वृद्धि होने पर आप अपनी क्रय क्षमता बढ़ा पाएंगे।

ऐसे में आपके लिए निवेश का मूल सैद्धांतिक समझ अत्यंत ही महत्वपूर्ण है, ताकि आप वर्तमान से कदम-दर-कदम मिलाकर चल सकें और अपने भविष्य को पूर्ण सुरक्षित बना सकें।

आपने शेयर बाज़ार में होने वाली जबरदस्त कमाई के किस्से जरूर सुने होंगे और आपके मन में भी इस तरह का लाभ हासिल करने की इच्छा जागी होगी, लेकिन आपने अपने किसी मित्र के बारे में ऐसी डरावनी खबर भी सुनी होगी कि वह किस तरह शेयर बाज़ार में अपनी सारी जमा-

पूंजी गंवा बैठा और तब आपने स्वयं को ढांढ़स बंधाया होगा कि शेयर बाज़ार में पैसे न लगाकर आपने ठीक ही किया।

शेयर के बारे में पूर्वाग्रह छोड़कर यह जानने का प्रयास करें कि शेयर है क्या? विवेकवान निवेशक काफी समझदारी के साथ शेयर खरीदते हैं और लाभ बटोरने में सफल भी होते हैं।

कई अध्ययनों से स्पष्ट हो चुका है कि दीर्घ अवधि में दूसरी सभी संपत्तियों की तुलना में शेयर से सबसे अधिक कमाई होती है। इसका अर्थ है कि आप बॉन्ड, फिक्स्ड डिपोजिट या सोने में निवेश करके जितना लाभ हासिल कर सकते हैं, उससे अधिक लाभ शेयर बाज़ार में निवेश करके हासिल कर सकते हैं।

यह भी सच है कि शेयर के साथ जोखिम भी जुड़ा होता है, लेकिन अगर आप लंबे समय तक खेलने में विश्वास करते हैं, तो आपको लाभ प्राप्त करने से कोई रोक नहीं सकता।

लेकिन शेयर बाज़ार में निवेश करने से पहले जरूरी है कि आप शेयर के बारे में जरूरी बातों को अच्छी तरह समझ लें।

शेयर को समझना अंतरिक्ष विज्ञान को समझने की तरह कठिन नहीं है। आप अपनी संपत्ति को किस तरह अधिक-से-अधिक बढ़ाना चाहते हैं और नुकसान के कारणों को

किस तरह दूर कर सकते हैं, इस तरह की रणनीति बनाने के लिए अत्यधिक मेधावी होने की आवश्यकता नहीं है।

अगर आप सोचते हैं कि आपके पास पर्याप्त समय नहीं है, तब आप किसी पोर्टफोलियो मैनेजर या म्यूचुअल फंड के जरिए निवेश कर सकते हैं, लेकिन आपको कुछ बुनियादी बातों की जानकारी रखनी पड़ेगी। यह जानना पड़ेगा कि कौन-सा फंड बेहतर है, फंड मैनेजर का चुनाव किस तरह किया जाए और उसके प्रदर्शन पर किस तरह नज़र रखी जाए।

किसी भी व्यवसाय में कई प्रकार की संपत्तियां होती हैं - मशीन, भवन, फर्नीचर, नगदी इत्यादि।

इसी तरह व्यवसाय में देनदारियां भी होती हैं। कम्पनी पर दूसरों का बकाया होता है। बैंक का ऋण, उधार ली गई सामग्रियां आदि देनदारियां कहलाती हैं।

कुल संपत्ति में से देनदारियों को घटाने के बाद जो बचता है, उसे मूलधन कहते हैं।

संपत्ति - देनदारियां = मूलधन

मूलधन वह राशि है जो व्यवसाय में व्यक्ति के पास होता है, जैसे-जैसे कारोबार बढ़ता जाता है और लाभ होने लगता है, वैसे-वैसे मूलधन भी बढ़ता जाता है। इसी मूलधन को शेयरों (या स्टॉक) के रूप में विभाजित किया जाता है।

अगर किसी कम्पनी का मूलधन 10 करोड़ रुपए है, तो इसे

10 रुपए प्रति शेयर के रूप में एक करोड़ शेयरों में विभाजित किया जा सकता है।

मूलधन का हिस्सा या कुछ शेयर उनके पास रहता है, जो कारोबार को शुरू करते हैं और उन्हें प्रोमोटर्स कहा जाता है।

शेष शेयर निवेशकों के पास होता है। ये निवेशक हम और आप जैसे आम लोग होते हैं या म्यूचुअल फंड और अन्य संस्थागत निवेशक होते हैं।

शेयर खरीदने का अर्थ

अब आप समझ गए होंगे कि शेयर खरीदने का अर्थ कारोबार में हिस्सेदारी हासिल करने की तरह होता है।

जब आप शेयर में निवेश करते हैं, तब आप बाजार में निवेश नहीं करते, आप एक कम्पनी के इकिटवटी शेयर में निवेश करते हैं। इस तरह आप कम्पनी के शेयर होल्डर या आंशिक रूप से मालिक बन जाते हैं।

चूंकि आप कम्पनी की संपत्ति के अंश के स्वामी होते हैं, इस तरह संपत्ति से अर्जित होने वाले मुनाफे या घाटे के हिस्सेदार भी बन जाते हैं।

मान लीजिए, आप गुजरात अम्बुजा सीमेंट के 100 शेयरों के मालिक हैं, तो इसका अर्थ है कि आप उस कम्पनी के क्षुद्रतम हिस्से के स्वामी हैं, चूंकि उस कम्पनी के लाखों

शेयर हैं।

शेयर खरदीने का अर्थ है कि किसी कारोबार को चलाने का सिर दर्द मोल लिए बिना ही उस कारोबार का हिस्सेदार बन जाना।

उदाहरण के तौर पर, अगर गुजरात अम्बुजा सीमेंट को मुनाफा होता है तो आपके शेयर का भाव भी बढ़ सकता है या घाटे की नौबत आने पर आपके शेयर का भाव भी घट सकता है।

भाव में वृद्धि का अर्थ

अगर किसी कम्पनी ने अपने मूलधन को 10 रुपए प्रति शेयर के हिसाब से विभाजित कर दिया है, तो 10 रुपए का शेयर का ‘फेस वैल्यू’ कहा जाएगा। जब शेयर की खरीद-बिक्री शेयर बाजार में की जाएगी, तो उसकी मांग और आपूर्ति के आधार पर उसके भाव में भी अंतर आ जाएगा।

अगर सभी उसी कम्पनी के शेयर खरीदना चाहेंगे तो भाव में वृद्धि आ जाएगी। अगर कोई शेयरों को खरीदने में दिलचस्पी नहीं लेगा और ज्यादा-से-ज्यादा लोग उस कम्पनी के शेयरों को बेचना चाहेंगे, तब भाव नीचे चला जाएगा।

किसी भी समय शेयर बाजार में शेयर के मूल्य को ‘शेयर का मूल्य’ या ‘शेयर का मार्केट वैल्यू’ कहा जाता है। इस

तरह 10 रुपए के फेस वैल्यू वाले शेयर को 55 रुपए में (फेस वैल्यू की तुलना में अधिक पर) या 9 रुपए में (फेस वैल्यू की तुलना में कम कीमत पर) बेचा जा सकता है।

जब किसी कम्पनी के शेयरों की संख्या के साथ उनके मार्केट वैल्यू को गुणा किया जाता है तो मार्केट कैपिटलाइजेशन सामने आता है।

उदाहरण के तौर पर, 1 नवंबर 2006 को एक कम्पनी के एक करोड़ शेयरों का फेस वैल्यू 10 रुपए और मार्केट वैल्यू 30 रुपए है तो 1 नवंबर 2006 को उसका मार्केट कैपिटलाइजेशन 30 रुपए कहलाएगा।

शेयर कैसे खरीदें

यह अच्छी बात है कि आप शेयर बाजार में किसी भी आजमाना चाहते हैं। स्टॉक एक्सचेंजों में शेयरों की खरीद-बिक्री की जाती है। भारत के दो प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज हैं - नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एन.एस.ई.) तथा बम्बई स्टॉक एक्सचेंज (बी.एस.ई.)।

आप तीन तरीके से शेयर खरीद सकते हैं - अपने ब्रोकर के माध्यम से, ऑनलाइन या उस समय खरीद सकते हैं, जब कोई कम्पनी शेयर इश्यू करती है। इसे 'इंशियल पब्लिक ऑफरिंग' (आई.पी.ओ.) कहते हैं।

शेयर बाज़ार की जानकारी

अगर आप शेयर बाज़ार में प्रवेश कर रहे हैं, तो आपके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि आप उन आवश्यक जानकारियों और पूँजी बाज़ार की विशिष्ट शब्दावलियों से परिचित हो जाएं, जिनका प्रयोग बहुतायत में शेयर बाज़ार में किया जाता है। इससे आपको न सिर्फ़ शेयर बाज़ार में लेन-देन में आसानी होगी, वरन् आपकी जानकारियां पूर्ण होने के कारण आप किसी भी प्रकार की अन्य दुविधाजनक स्थिति से मुक्त रहेंगे।

कम्पनी किसे कहते हैं

शेयर बाजार में प्रवेश करने से पहले हम जिस शब्दावली को सबसे पहले सुनते हैं और जिससे सबसे पहला साबका हमारा पड़ता है, वह है कम्पनी। कम्पनी शब्द मूल रूप से लैटिन भाषा से लिया गया है, जिसे ‘Com’ का अर्थ ‘साथ-साथ’ और ‘Panis’ का अर्थ ‘रोटी’ से है। प्रारंभ में कम्पनी ऐसे कुछ व्यक्तियों के समूह को भी कहा जाता था, जो

अपनी रोटी एक साथ खाते थे। धीरे-धीरे यह शब्द व्यापारी वर्ग की पहचान बनता चला गया, क्योंकि उस समय प्रायः व्यापारी लोग अकसर अपने व्यापारिक सौदे भोजन करते समय किया करते थे, इसलिए व्यापार करने वाली संस्था का नाम ‘कम्पनी’ पड़ा। परंतु वर्तमान समय में इसके अर्थ में काफ़ी तब्दीली आ गई है, अब कम्पनी का आशय ऐसे संघ से हो गया है, जिसमें संयुक्त पूँजी होती है।

अब कम्पनी अपने विस्तृत अर्थों में वह व्यापारिक संगठन है, जिसे कुछ लोग (जिन्हें शेयर होल्डर कहा जाता है) किसी व्यापार के संचालन के लिए गठित करते हैं।

यही शेयर होल्डर कम्पनी का कार्य सुचारू रूप से चलाने के लिए अपने चुने हुए प्रतिनिधियों का गठन करते हैं, इन्हीं ही ‘बोर्ड ऑफ डायरेक्टरी’ कहा जाता है।

अगर हम इसे दूसरे शब्दों में कहें तो कह सकते हैं कि कम्पनी विभिन्न व्यक्तियों का वह समूह है, जिसका गठन किसी विशेष उद्देश्य के लिए किया जाता है। यह पूर्णतः वैधानिक समूह होता है, जिसका निर्माण वर्तमान कानूनों के अंतर्गत किया जाता है, जिसका दायित्व साधारणतः सीमित ओर अस्तित्व उसके सदस्यों से पृथक होता है। सैद्धांतिक दृष्टि से कम्पनी को दो वर्गों में बांटा जा सकता है - (1) साझेदारी (2) एकल स्वामित्व।

एकल स्वामित्व वाले व्यवसाय में संचालन एक ही व्यक्ति

द्वारा किया जाता है, वही व्यक्ति व्यवसाय में होने वाले लाभ-हानि का पूर्णतः जिम्मेदार होता है जबकि साझेदारी फर्म में दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी कारोबार को लाभ के उद्देश्य से करते हैं।

व्यवसाय शुरू करने और उसे चालू रखने के लिए जिस धन को मूलधन के रूप में लगाया जाता है, उस धन को 'कैपिटल' कहा जाता है। यह शुरुआती कैपिटल शेयर होल्डरों से लिया जाता है, क्योंकि वे ही कम्पनी के साझे मालिक होते हैं। शेयर होल्डरों से प्राप्त इस धन को 'इक्विटी कैपिटल' कहते हैं। कम्पनियां इस धन की व्यवस्था बैंकों, आर्थिक संस्थानों तथा जनता से उधार लेकर भी करती हैं। जनता से यह पैसा या तो डिबेंचर (ऋण पत्र) की बिक्री के ज़रिए कम्पनियां लेती हैं या फिक्सड डिपॉजिट के ज़रिए। डिबेंचर की खरीद करने वाले निवेशक को 'डिबेंचर होल्डर' कहा जाता है। कम्पनी इन लोगों की कर्जदार होती है, दूसरे शब्दों में इनका पैसा चुकाना कम्पनी की बाध्यता होती है, जबकि शेयर होल्डर कम्पनी के मालिक होते हैं।

शेयर होल्डरों के वैधानिक अधिकार-कानून यह समझता है कि चूंकि शेयर होल्डर कम्पनी के किसी भी निर्णय, कार्य-पद्धति अथवा व्यापारिक समझौतों से सीधे संबद्ध नहीं होता, अतः उसका वैधानिक अधिकार और उत्तरदायित्व दोनों ही सीमित होते हैं। कानून में कम्पनी की अपनी अलग हैसियत

होती है और शेयर होल्डरों की अलग। कम्पनी अपने शेयर धारकों को बिना संबद्ध किए अपने हर प्रकार के व्यापारिक समझौते कर सकती है, प्रॉपर्टी की खरीद-बिक्री कर सकती है, कर्ज ले सकती है। कम्पनी में काम करने वाले लोगों का डायरेक्टरों के किसी भी कृत्य के लिए शेयर होल्डरों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। एक शेयर होल्डर की सारी जिम्मेदारी उस कम्पनी में उसके शेयरों के मूल्य तक सीमित होती है। यह उनकी सिर्फ़ आर्थिक जिम्मेदारी मात्र होती है, जो कम्पनी के शेयर खरीदने पर पूरी हो जाती है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने किसी कम्पनी के 10 रुपए के 100 शेयर खरीदे, तब कम्पनी के प्रति उस व्यक्ति की आर्थिक जिम्मेदारी 1000 रुपए की हुई, जो शेयर खरीदने के बाद पूरी हो गई। इसके बाद अगर वह कम्पनी दिवालिया घोषित हो गई तो अधिक-से-अधिक शेयर मार्केट में उसका भाव शून्य तक गिर सकता है, अर्थात् आप अपने 100 रुपए से हाथ धो बैठेंगे, परंतु किसी भी परिस्थिति में कानून या नैतिक रूप से आपकी कम्पनी की देनदारियों को चुकाने के लिए नहीं कहा जा सकता। इस नियम को वैधानिक भाषा में सीमित जिम्मेदारी या 'लिमिटेड लायाबिलीटी' कहा जाता है।

हर कम्पनी अपने नाम के आगे लिमिटेड शब्द का प्रयोग करती है, यह उसकी कानूनी बाध्यता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उसके शेयर होल्डरों की आर्थिक जिम्मेदारी

सीमित है, इसलिए जब आप किसी कम्पनी का शेयर खरीदते हैं तो पूरी तरह निश्चिंत रह सकते हैं कि आपको उस कम्पनी की आर्थिक या कानूनी परेशानियों से कुछ भी लेना-देना नहीं है।

आप अपने खरीदे गए शेयरों का पूर्ण स्वामित्व प्राप्त करते हैं, शेयर चल संपत्ति होते हैं, शेयर होल्डर इन्हें स्वेच्छा से खरीद अथवा बेच सकता है, भेट स्वरूप किसी को दे सकता है, वसीयत कर सकता है, इसमें किसी भी तरह की कानूनी वैधता उसकी राह नहीं रोकती, चूंकि कम्पनी की अपनी स्वाधीन हस्ती होती है, इससे शेयर होल्डर रूपी मालिकों के बदलने से उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। कम्पनी जब अपने व्यवसाय की शुरुआत करती है, तब उसके शेयरों को अंकित मूल्य (Face Value) के अनुसार सीधे खरीदा जा सकता है। इसी से कम्पनी अपने शुरुआती मूलधन का प्रबंध करती है। उसके बाद शेयर बाज़ार में होने वाले सौदों से कम्पनी पर कोई असर नहीं पड़ता है। आइए, एक उदाहरण से इसे हम समझते हैं।

मान लीजिए कि अगर किसी कम्पनी का 10 रुपए में जारी कोई शेयर बाज़ार में 2000 रुपए प्रति शेयर के भाव से बिक रहा है, तो क्या इसका अर्थ यह है कि कम्पनी पहले से 20 गुणा अधिक संपत्ति हो गई है। नहीं, बल्कि इसका अर्थ सिर्फ़ यह है कि बाज़ार में शेयर के खरीदार कम्पनी को अच्छा मान रहे हैं तथा निवेशक उसके शेयरों को

2000 रुपए में खरीदने के लिए तैयार हैं।

कम्पनियों के प्रकार

सैद्धांतिक दृष्टिकोण से कम्पनियां दो प्रकार की होती हैं -

(1) पब्लिक लिमिटेड कम्पनियां और प्राइवेट लिमिटेड कम्पनियां। जहां तक शेयरों के खरीद की बात है तो हमारा मकसद सिर्फ़ पब्लिक लिमिटेड कम्पनियों से होता है, प्राइवेट लिमिटेड कम्पनियों के शेयर बाज़ार के ज़रिए खरीदे या बेचे नहीं जा सकते। इन कम्पनियों को अपने शेयर जनता में बेचने की अनुमति नहीं होती।

मेम्बरों की सेची : सदस्यों की समुचित जानकारी, उन्हें लाभांश, राइट्स शेयर या बोनस शेयर आदि पहुंचाने में सुविधा के लिए प्रत्येक कम्पनी अपने शेयर होल्डरों की सूची रखती है। इस सूची में शेयर होल्डर का नाम, पता तथा अन्य जरूरी जानकारियां दर्ज होती हैं।

आजकल यह जानकारियां नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉज़श्री लिमिटेड (NSDL), सेंट्रल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (CSDL) के पास भी रखी जाती हैं।

सालाना जानकारी

हर कम्पनी अपने काम-काज और खातों की जानकारी के साथ एक वार्षिक रिपोर्ट तैयार करती है। ये सभी जानकारियां सभी शेयर होल्डरों को कम्पनी की वार्षिक

बैठक या 'एनुअल जनरल बोर्ड मीटिंग' (Annual General Board) से कुछ दिन पहले भेज दी जाती है।

इस वार्षिक रिपोर्ट के साथ कम्पनी की बैलेंस शीट (Balance Sheet) और नफे-नुकसान का लेखा-जोखा (Profit and Loss Account) भी होता है। यह जानकारी शेयर होल्डरों और उन नए संभावित निवेशकों के लिए काफ़ी आवश्यक होता है, जो इस कम्पनी में निवेश करने के बारे में विचार कर रहे होते हैं।

यह रिपोर्ट डायरेक्टरों द्वारा उद्घोषित कम्पनी में कारोबार की स्थिति, भविष्य की कार्य योजनाओं, लाभांश की घोषणा और ऐसी आय - कई बातों का निष्पादन करता है, जिसका असर कम्पनी की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है।

इस रिपोर्ट की सही या गलत होने की जानकारी निवेशक ऑडिटर की रिपोर्ट से आसानी से जान सकते हैं।

नए निवेशक के लिए इस वार्षिक रिपोर्ट की जानकारी अत्यंत आवश्यक इसलिए होती है कि वह निवेश से पहले उस कम्पनी की ब्यौरेवार स्थिति एवं अपने निवेश के भविष्य के प्रति पूर्ण आश्वस्त हो सके।

शेयरों के प्रकार

शेयर्स अपनी बाज़ार की प्रकृति और सैद्धांतिकता के अनुसार मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं - (1) प्रेफरेन्स शेयर

और (2) इक्विटी शेयर।

1. **प्रेफरेन्स शेयर (Preference Share)** - यह शेयर वे शेयर होते हैं, जिन पर लाभांश की दर तय होती है। अगर किन्हीं परिस्थितियों में कम्पनी बंद होती है तो लाभांश और मूलधन की वापसी पर इन शेयरों का अधिकार इक्विटी शेयरों से पहले होता है। अगर किन्हीं परिस्थितियों के चलते कम्पनी बाज़ार में मुनाफा नहीं कमा रही होती है अथवा इन शेयर होल्डरों को लाभांश नहीं दे पाती है, तो बहुमेलेटिव शेयर जारी करती है। इन शेयरों का अर्थ यह होता है जब कम्पनी मुनाफा कमाती है और उसके पास पैसे आ जाते हैं तो वह अपना पीछे का सारा शेष लाभांश चुका देती है। दूसरे शब्दों में प्रेफरेन्स शेयर होल्डरों को कम्पनी के घाटे या मुनाफे की परवाह नहीं होती, इनका तय लाभांश हमेशा बना रहता है। परंतु इसके साथ-साथ प्रेफरेंस शेयर होल्डरों को उनका मूलधन तब तक वापस नहीं मिल पाता, जब तक वह कम्पनी चलती रहती है, मात्र एक प्रकार के प्रेफरेंस शेयरों पर यह नियम लागू नहीं होता 'रिडियेबल प्रेफरेंस शेयर'। इन शेयरों का मूलधन एक तय अवधि पूरी होने पर चुका दिया जाता है।
2. **इक्विटी शेयर (Equity Share)** - इन शेयरों पर तय लाभांश की गारंटी नहीं होती। सीधे शब्दों में कहा

जाए तो इन शेयरों पर किसी भी लाभांश के मिलने की कोई गारंटी नहीं होती। जो निवेशकर्ता अधिकतम जोखिम उठाकर अधिकतम लाभ कमाने के इच्छुक होते हैं, उनके लिए इक्विटी शेयर का विकल्प मौजूद रहता है, परंतु इन शेयरों के धारक किसी वर्ष में लाभांश प्राप्त करने का अधिकार रखते हैं। इक्विटी शेयर धारकों को ही कम्पनी का स्वामी माना जाता है। इन शेयर धारकों को कम्पनी में सभी महत्वपूर्ण मत देने का अधिकार प्राप्त होता है।

कम्पनी की वार्षिक बैठक में इनके प्रस्तावित लाभांश की घोषणा की जाती है। यह लाभांश की दर कम्पनी के द्वारा अर्जित लाभ संचय तथा पूर्वाधिकार अंशों के लाभांश के पश्चात कुल अंशों के विभाजित किया जाता है।

इक्विटी शेयरों पर सबसे ज्यादा खतरा और उसी के मुताबिक सबसे ज्यादा लाभ बना रहता है। कम्पनी की बढ़त का सबसे ज्यादा उन्हीं को प्राप्त होता है। जहाँ प्रेफरेन्स शेयर पर तयशुदा लाभ मिलता है वहीं इक्विटी शेयरों पर मुनाफे के साथ लाभ बढ़ता है।

शेयरों के कुछ अन्य प्रकार

प्रेफरेंस और इक्विटी शेयरों के अलावा भी शेयरों के कुछ अन्य प्रकार होते हैं :

1. राइट्स शेयर (Rights Share) - कम्पनी जो शेयर

अपनी मूल पूँजी में बढ़त के लिए समय-समय पर जारी करती है, उन्हें राइट्स शेयर कहा जाता है। यह एक प्रकार के इक्विटी शेयर ही होते हैं। इन्हें राइट्स शेयर इसलिए कहा जाता है कि इन्हें खरीददारी का सबसे पहला अधिकार कम्पनी के पुराने शेयर धारकों को होता है। जिस शेयर होल्डर के पास जितने होते हैं, उसी के हिसाब से इन्हें बेचा जाता है।

अगर नए राइट शेयर उस दाम पर बेचे जा रहे हैं, जिन पर पुराने शेयरों को बेचा गया था तो उन्हें एट पार तथा अगर उनका दाम बढ़ा हुआ होता है तो उन्हें प्रीमियम कहा जाता है।

2. बोनस शेयर (Bonus share) - अपनी पूँजी में वृद्धि

के लिए जब कम्पनी अंश के रूप में शेयर जारी करती है तो उसे बोनस शेयर कहा जाता है इसका एक नाम पूँजीकरण अंश भी है।

बोनस शेयर से अंशधारियों के अंश में वृद्धि के साथ-साथ अधिक लाभांश कमाने का अवसर भी रहता है।

जब किसी कम्पनी के पास लाभांश की बड़ी राशि कोष के रूप में संयतिम हो जाती है तो कम्पनी कोष को बोनस शेयर के रूप में पूँजी में परिवर्तित कर लेती है। इसे निवेशकर्ता के पास शेयरों की संख्या के अनुपात में निर्गमित किया जाता है। कोई कम्पनी प्रथम बोनस अंश

निर्गमन के पश्चात् 12 माह बाद ही इसका बोनस अंश निर्गमित कर सकती है। इससे शेयर धारकों को संचय का लाभ लाभांश के रूप में प्राप्त न होकर अंश के रूप में प्राप्त होता है।

एक उदाहरण के द्वारा इसे समझना ज्यादा सरल होगा। मान लीजिए, एक कम्पनी एक्स अपने शेयर धारकों को 1:2 के अनुपात में बोनस अंश जारी करती है, उस पर प्राप्त लाभांश क्या होगा ?

इक्विटी शेयर कैपिटल = रुपए 1,00,000

1,00,000 शेयर @ 10 प्रति

संचित कोष = रुपए 2,00,000

मान लीजिए, किसी व्यक्ति के पास इस कम्पनी के 10,000 शेयर्स रुपए 10 के हिसाब से रुपए 1,00,000 मूल्य में हैं, तो उसे इस कम्पनी द्वारा बोनस अंश निर्गमित करने पर 5,000 बोनस अंश दिए जाएंगे। ($10,000 \times \frac{1}{2}$)।

बोनस अंशों के निर्गमन के पश्चात् उस व्यक्ति के पास इस कम्पनी के 15,000 अंश हो जाएंगे और उसे लाभांश 15,000 अंशों पर मिलेगा और उसकी लाभांश दर बढ़ जाएगी।

निवेश के लिए कुछ अन्य आवश्यक

जानकारियां

1. स्टॉक एक्सचेंज - 'स्टॉक एक्सचेंज' एक संगठित पूँजी बाज़ार है, जहां प्रतिभूतियों के क्रेता व विक्रेता स्टॉक ब्रोकरों के द्वारा प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय करते हैं। इसे स्टॉक मार्केट भी कहा जाता है। स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों का क्रय-विक्रय लाइसेंस प्राप्त शेयर दलाल के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। दलालों के लिए कमीशन की दर तय होती है, जिसे 'ब्रोकरेज' (दलाली) कहते हैं।

भारत में प्रथम संगठित स्टॉक एक्सचेंज की स्थापना मुम्बई में सन् 1887 में 'नेटिव शेयर एंड स्टॉक ब्रोकर्स एसोसिएशन' (Native Share and Stock Broker Association) के नाम से हुई थी।

देश में इस समय कुल बाइस (22) मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज - मुबई, कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई, अहमदाबाद, हैदराबाद, बंगलौर, इंदौर, कोचिन, कानपुर, पुणे, लुधियाना, गोवाहटी, मंगलौर, पटना, जयपुर, कटक, भुवनेश्वर, मेरठ, कोयम्बटूर, राजकोट तथा बड़ोदरा में स्थित हैं। मुंबई में तीन स्टॉक एक्सचेंज हैं BSE, NSE तथा OTC।

स्टॉक एक्सचेंज की उपयोगिता

स्टॉक एक्सचेंज की उपयोगिता निम्नवत है -

1. स्टॉक एक्सचेंज देश की अर्थव्यवस्था की प्रगति का सूचक होता है।
2. स्टॉक एक्सचेंज पूंजी निर्माण में सहायक है।
3. स्टॉक एक्सचेंज किसी भी देश के औद्योगिक विकास का परिचायक होता है।

(2) **ब्लू-चिप (Blue-Chip)** - यह व्यक्तिगत पसंद की शब्दावली है, यह शब्द पूंजी बाज़ार में निवेशक उस कम्पनी के लिए प्रयोग करते हैं, जो अच्छा व्यवसाय देती है। इसमें अधिकतर वे कम्पनियां शामिल होती हैं, जो बड़ा कारोबार, अच्छी तकनीक, सुदृढ़ प्रशासन तथा व्यापार में ईमानदारी के बल पर अच्छा लाभांश देती हैं।

(3) तेज़दिए और मंददिए - निकट भविष्य में शेयरों का दाम बढ़ने की उम्मीद करने वाले तेज़दिए कहे जाते हैं, इन्हें बुल कहा जाता है। इनके अधिक कारोबार करने से बाज़ार में तेज़ी आ जाती है और शेयरों के दाम बढ़ने लगते हैं। ऐसे बाज़ार को बुल मार्केट (Bull Market) कहा जाता है। बाज़ार के प्रति निराशाजनक भाव रखने वालों को मंददिया कहा जाता है, इन्हें बिअर कहा जाता है। इनके अधिक प्रभाव से बाज़ार में मंदी आ जाती है, जिसे मंददियों का बाज़ार कहा जाता है।

(4) बॉय-बैक (Buy-Back) - जब कोई कंपनी यह मानती है कि बाज़ार में उसके शेयरों के उचित दम पर कम भाव मिल रहे हैं, तो वह अपनी ही पूँजी से अपने शेयर वापस खरीद लेती है। बाज़ार की इस स्थिति को बॉय बैक कहते हैं।

कम्पनी के ऐसा करने से उसकी इक्विटी कैपिटल कम हो जाती है, क्योंकि बाज़ार से वापस खरीदे गए शेयर खारिज़ कर दिए जाते हैं और कानूनन उन्हें दोबारा जारी नहीं किया जा सकता। इसका लाभ यह होता है कि इससे प्रति शेयर आमदनी (ई.पी.एस.) बढ़ जाती है, क्योंकि उतना शुद्ध लाभ अब पहले से कम इक्विटी कैपिटल पर विभाजित होता है। परिणाम यह होता है कि बाज़ार में कम्पनी के शेयर को बेहतर पी./ई. मिलता है और शेयर का दाम

बॉय-बैक से पहले के दाम से बहुत बढ़ जाता है।

शेयरों में विभाजन (Stock Split)

किसी कम्पनी के इक्विटी पर बिना कोई प्रभाव डाले जब कोई कम्पनी मौजूदा शेयरों को कम मूल्य (फेस वैल्यू) के शेयरों में विभाजित कर दिया जाता है, तो उसे स्टॉक स्प्लिट या शेयरों में विभाजन का नाम दिया जाता है। इससे निवेशकों को लाभ होता है, क्योंकि शेयर पहले की अपेक्षा सस्ता हो जाता है। इससे शेयर में खरीददारों की रुचि बढ़ती है और बाजार में उसके भाव चढ़ने लगते हैं।

डिमैट क्या है (What is Demat) - पूंजी बाजार की दिनों-दिन बढ़ती उपयोगिता एवं व्यस्तता के मद्देनज़र अब सभी प्रतिभूतियों का अमूर्तीकरण अनिवार्य कर दिया गया है, जिससे किसी भी प्रकार का जोखिम एवं स्टैम्प ड्यूटी का खर्च समाप्त हो गया है। नेशनल सिक्योरिटी डिपोजिटरी लि. तथा सेंट्रल डिपोजिटरी सर्विसिज इंडिया लि. बुक एंट्री के रूप में शेयरों के ऑडरशिप का रिकॉर्ड रखते हैं और शेयर्स का अंतरण, सुरक्षा आदि कार्य करते हैं। यहां सभी शेयर्स गैर काग़जी रूप में रखे जाते हैं और डिपोजिटरी में रखे गए सारे शेयर्स ज्यों-के-त्यों रहते हैं। डिपोजिटरी के रिकॉर्ड में शेयर में निवेश करने वाले निवेशक बेनिफिशयल ऑनर होते हैं तथा डिपोजिटरी कम्पनी के रिकॉर्ड रजिस्टर्ड स्वामी होते हैं। इस प्रकार शेयर से

संबंधित समस्त अधिकार शेयर स्वामियों के ही होते हैं।

डिपोजिटरी अपने एजेंटों, जिन्हें सामान्यतः डिपोजिटरी पार्टीसिपेंट कहा जाता है, के माध्यम से अपने निवेशकों से संपर्क रखते हैं। जिस प्रकार आप बैंकों में अपना धन रखते हैं और उसका भुगतान बड़ी आसानी से चैक द्वारा कर देते हैं, उसी प्रकार निवेशक के शेयरों की डिपोजिटरी पार्टीसिपेंट के पास जमा रहते हैं और बैंक के चैक-बुक की तरह आपको एक बुक दी जाती है, जिससे आप बड़ी आसानी से लेन-देन कर सकते हैं। इसके लिए आपको बैंक के अकाउंट की तरह आपको एक अकाउंट नंबर भी दिया जाता है।

अगर आप अपना शेयर्स व्यवसाय डी.पी. के माध्यम से करना चाहते हैं, तो सबसे बेहतर यही है कि आप उसी डी.पी. का प्रयोग करें जिसे आपका ब्रोकर करता है। डी.पी. के पास अपने शेयर डीमैट कराने की प्रक्रिया कोई बहुत मुश्किल प्रक्रिया नहीं है। किसी डी.पी. के पास अपना डीमैट अकाउंट खोलने के बाद बस आपको अपने शेयर रद्द करके उसे सौंप देना है। साथ ही आप एक ‘डीमैट रिक्वेस्ट फॉर्म’ (Demat Request Form) भरकर उसे देना है, जिसमें आपके शेयरों को फोलियो संख्या, सर्टिफिकेट नंबर व अन्य विवरण दर्ज किया जाता है। सामान्यतः सारी प्रक्रिया के पूरे होने में लगभग एक महीना लग जाता है। इस प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी के लिए आप किसी भी

डी.पी. से संपर्क कर सकते हैं।

अगर आप चाहें तो आप पुनः इस प्रक्रिया का (Demat Exalisation) री-मैटीरियलाइजेशन कर पूर्ण स्वतंत्रता के साथ कर सकते हैं। इसका अर्थ यह होगा कि पुनः आप अपने शेयरों को डिमैट रूप में वापस काग़जी शेयर सर्टिफिकेट के रूप में तब्दील कर देते हैं।

डीमैटीरियलाईजेशन से जुड़े कुछ तथ्य

डीमैट शेयर्स की खरीद (Purchase at Demat Shares ?) पब्लिक इश्यू में निवेशक डी.पी. को सूचित करता है कि उसके ऐलोटिड शेयर्स को उसके खाते में जमा करें। सेकेंडरी मार्केट से शारीर खरीदने के लिए आप डी.पी. को एक बार स्मार्ट आदेश देते हैं।

आप यह निश्चित कर लें कि आपका एजेंट आपके शेयर्स को अपने क्लियरिंग अकाउंट से आपके डिपोजिटरी अकाउंट में बुक क्लोजर से पहले एंट्री करा देता है या नहीं, यदि शेयर्स की एंट्री आपके दलाल के क्लियरिंग अकाउंट में ही रह जाती है तो कम्पनी दलाल को ही डिवीडेंट या बोनस देगी।

डीमैट शेयर्स की बिक्री (Sales of Demat Shares) -
अगर आप अपने शेयर्स को बेचना चाहते हैं तो आप अपने डी.पी. को यह आदेश देंगे कि आपके द्वारा बेचे गए शेयरों

की संख्या को आपके खाते में डाल दें और आपके दलाल के विलयरिंग अकाउंट में जमा कर दें। आपको शेयर्स बेचने संबंधित यह आदेश अपने डी.पी. को देना होगा, जिसमें आप उस डिमैट स्लिप का प्रयोग करेंगे, जो आपको डी.पी. द्वारा खाता खोलते समय दिया गया था।

डिमैट खाता और इसकी कार्य प्रणाली (Meaning and Working of Demat Account) आपके शेयर्स को सुरक्षित और सुविधाजनक रखने का तरीका है।

डिमैट खाते में आपको नामांकन की सुविधा भी प्राप्त होती है, आई.पी.ओ. राइट्स तथा बोनस में आवंटित शेयरों को सीधे तौर पर निवेशक के खाते में क्रेडिट कर दिया जाता है। आपको डिलीवरी इंस्ट्रक्शन स्लिप बुक को हमेशा सुरक्षित रखना चाहिए।

यदि आप बार-बार ट्रांजेक्शन नहीं करते हैं तो आपके डिमैट खाते के लिए दी गई फ्रीजिंग सुविधा का प्रयोग करें। आप इंटरनेट के माध्यम से भी पूर्ण सुविधाजनक ढंग से अपने डिमैट खाते को मॉनीटर कर सकते हैं। सी.डी.एस.एल. की इंटरनेट सुविधा 'हनी' से आप अपने डिमैट खाते की स्थिति जान सकते हैं और इससे आपको होल्डिंग का दैनिक मूल्यांकन भी मिलता है।

इस संदेह से बचने के लिए कि कहीं प्रतिभूतियों का गलत ट्रांसफर न हो जाए सी.डी.एस.एल. के हर खाते को विशेष

नंबर आवंटित किया जाता है। यह नंबर 16 अंकों का होता है, पहले 8 अंक डी.पी.आई.डी. तथा अंतिम 8 अंक क्लाइंट आई.डी. होता है। उदाहरण के लिए नमूना नंबर निम्नवत है -

डी.पी.आई.डी.

क्लाइंट आई.डी.

12401005

00480321

डिमैट अकाउंट पर प्राप्त सुविधाएं

निम्नलिखित सुविधाएं आप डिमैट अकाउंट से प्राप्त कर सकते हैं -

(क) लोन सुविधा - आप अपने डिमैट होल्डिंग्स पर लोन ले सकते हैं, परंतु इसके लिए आपको अपने अकाउंट के सिक्योरिटीज को लोन देने वाले बैंक के पास गिरवी रखना पड़ेगा।

(ख) स्पीड ई - यह इंटरनेट द्वारा डिलीवरी निर्देशों को देने की सुविधा है, इस सुविधा के लिए आप अपने डी.पी. से कह सकते हैं।

(ग) नामांकन की सुविधा - डिमैट अकाउंट पर आपको नामांकन की सुविधा मिलती है। एकल या संयुक्त अकाउंट खाता रखने वाले व्यक्ति इस सुविधा का उपयोग कर सकते हैं। खाता धारक की मृत्यु की स्थिति में शेयर को प्राप्त करने के लिए नामित व्यक्ति

को डी.पी. से मिलकर कानूनी कार्रवाई करनी पड़ती है।

(घ) आई.डी.ई.ए.एस (I.D.E.A.S.) - इस सुविधा द्वारा आप अपनी होल्डिंग्स को इंटरनेट पर देख सकते हैं।

बोल्ट व नीट प्रणाली (Bolt & Neat Method)

शेयरों के बढ़ते कारोबार एवं मध्यवर्गीय जनता से लेकर उच्चवर्ग तक की सहभागिता के कारण आज यह बाज़ार दिन-पर-दिन नए आयाम तय करता जा रहा है, अब स्टॉक एक्सचेंज में खड़े होकर बोली लगाने की जगह अब यह संपूर्ण व्यवसाय बड़े आराम से ब्रोकर अपने कार्यालय में लगे कम्प्यूटर से ग्राहकों के लिए शेयर्स खरीद और बेच सकता है। यह कारोबार कम्प्यूटर के माध्यम से बोल्ट व नीट प्रणाली के माध्यम से ही किया जाता है। बोल्ट बी.एस.ई. की कम्प्यूटरकृत कारोबार प्रणाली है और नीट एन.एस.ई. की। यह सारा कारोबार सोमवार से शुक्रवार प्रातः 9:55 से सायं 3:30 बजे तक किया जाता है। इस प्रणाली की सहायता से शेयर के कारोबार एक संपूर्ण भारतव्यापी, स्वचालित, कम्प्यूटरीकृत नेटवर्क के माध्यम से तत्काल हो जाता है।

इस प्रणाली के कई लाभ मिले हैं - सर्वप्रथम तो इससे

कारोबार में पारदर्शिता की वृद्धि हुई है, अब निवेशक अपने शेयर्स खरीदने या बेचने का ऑर्डर दर्ज कर उसे तुरंत पूरा होते देख सकते हैं। वे अब अपने सौदे ठीक उन्हीं दामों पर कर सकते हैं, जिस पर वे चाहते हैं। अब देश के किसी भी कोने में बैठा व्यवसायी अथवा निवेशक इस प्रणाली के माध्यम से मुंबई में बैठे व्यवसायी की तरह ही काम कर सकता है।

फ्यूचर्स व ऑप्शन्स (Future & Options)

फ्यूचर्स बाजार में केवल कुछ विशिष्ट और चुने हुए शेयरों का कारोबार होता है। नकद बाजार में आपको खरीद अथवा बिक्री करते समय नकद रूपए से करते हैं। फ्यूचर्स बाजार में केवल सौदे में हुए लाभ अथवा हानि का नकद भुगतान किया जाता है।

फ्यूचर्स बाजार में आपके खरीदे गए शेयरों के पैसे नहीं देने पड़ते, आप केवल मार्जिन मनी मात्र अदा करते हैं, जो आपके खरीदे गए शेयरों के कुल मूल्य का 10 से 20 प्रतिशत तक हो सकता है। विभिन्न कांट्रैक्टों का मार्जिन मनी समय-समय पर एक्सचेंज द्वारा तय किया जाता है।

फ्यूचर्स कारोबार शेयर व्यापारियों को यूं तो बेहद आकर्षक लगता है, क्योंकि आज के परिवेश में मात्र मार्जिन मनी के कुछ लाख चुकाकर व्यापारी उससे कई गुण का कारोबार कर सकते हैं, पर यह दोधारी तलवार है, जिसमें अधिक

लाभ के चक्कर में भारी नुकसान भी झेलना पड़ सकता है। ‘फ्यूचर्स’ और ‘ऑप्शन्स’ अनुभवी व्यापारियों और सट्टेबाजों के लिए ही उपयुक्त है। आमतौर पर आम निवेशक को इससे दूर रहने की ही सलाह दी जाती है, परंतु अगर आप इसमें हाथ आज़माना चाहते हैं तो स्टाम्प ऑर्डर का प्रयोग करें, जिससे कम नुकसान हो।

ऑप्शन्स

यह भी एक प्रकार के फ्यूचर्स कारोबार की तरह ही है, जब कोई निवेशक किसी कान्ट्रेक्ट पर ऑप्शन्स खरीदता है तो अवधि समाप्त होने से पहले उसे किसी भी ऐसे दाम पर खरीदने या बेचने के लिए एक प्रीमियम चुकाता है, जिस दाम से उसे लाभ या नुकसान कम-से-कम हो। अगर वह कान्ट्रेक्ट के समाप्त करने के इस विकल्प का प्रयोग नहीं करता तो उसे अपने उस प्रीमियम का नुकसान होगा जो उसने ऑप्शन्स की खरीद के लिए चुकाया था। फ्यूचर्स की अपेक्षा ऑप्शन अधिक सुरक्षित माना जाता है क्योंकि फ्यूचर्स में नुकसान की कोई सीमा नहीं होती।

ऑप्शन्स और फ्यूचर्स के कारोबार बहुत जटिल होते हैं। इनमें बहुत अनुभव की आवश्यकता होती है। अतः नये निवेशकों को इससे दूर ही रहना चाहिए।

सेबी (Securities & Exchange Board

of India)

सेबी संसद की स्वीकृति से बनी भारत सरकार की एक वैधानिक संस्था है जो शेयर बाज़ार से संबंधित सभी कार्य प्रणालियों पर दृष्टि रखती है। इसका सबसे मुख्य कार्य निवेशकों के हितों को सुरक्षित रखना होता है। यह किसी भी कम्पनी अथवा दलाल को उसके अवैधानिक कार्य अथवा किसी कपटपूर्ण आचरण पर दंडित कर सकती है, उसके व्यवसाय पर रोक लगा सकती है। किसी भी कम्पनी को अपना पब्लिक इश्यू बाज़ार में उतारने से पहले सेबी की पूर्वानुमति लेना आवश्यक होता है।

शेयर बाज़ार सूचकांक का क्या अर्थ है - सूचकांक मूलतः एक मापन यंत्र जैसा काम करता है, जो बाज़ार एवं शेयर कारोबार के संपूर्ण व्यवहार का जायजा लेता है। दूसरे शब्दों में सूचकांक मूल रूप से उन चुनिंदा शेयरों का औसत होता है, जो लगभग पूरे शेयर बाज़ार का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन चुने हुए शेयरों में आमतौर पर लिकिविडिटी का स्तर अधिक होता है। बाज़ार में और निवेशकों के पास ये शेयर काफ़ी अधिक मात्रा में होते हैं और कारोबार भी इनमें काफ़ी अधिक मात्रा में होते हैं। अगर किसी निवेशक को यह मालूम करना होता है कि बाज़ार में तेज़ी आ रही है या मंदी तो उसे केवल उस समय का सूचकांक देखने की आवश्यकता होती है, इसके लिए उसे बाज़ार के सभी शेयरों का भाव जानने की कोई ज़रूरत

नहीं होती। सामान्यतः सूचकांक पूरे शेयर बाज़ार का द्योतक होता है।

सूचकांक की सहायता से ही म्यूचुअल फंड भी अपने पोर्टफोलियो का मूल्यांकन करते हैं। कुछ म्यूचुअल फंड तो इंडेक्स फंड भी देते हैं, जिनमें सूचकांक में शामिल कम्पनियों में निवेश किया जाता है। इससे सूचकांक के ही समान लाभ मिलता है।

बी.एस.ई. का सेंसिटिव इंडेक्स जिसे बोलचाल की भाषा में सेंसेक्स भी कहा जाता है - यह भारत में सबसे अधिक प्रयोग किया जाने वाला सूचकांक है। इसका गठन 1986 में किया गया था। सेंसेक्स का मूल वर्ष 1978-79 रखा गया, उस वर्ष में सेंसेक्स का मूल्य 100 मान लिया गया। सेंसेक्स में 30 उन शेयरों को शामिल किया जाता है जो दैनिक कारोबार के आधार पर बाज़ार को सर्वाधिक प्रभावित कर रहे होते हैं। हर शेयर को बाज़ार में उसके पूंजीकरण कुल शेयरों की गणना गुणा शेयर के दाम से आंका जाता है। इसलिए शेयरों के दाम में किसी भी बदलाव से सेंसेक्स बहुत ज़ल्दी प्रभावित हो जाता है।

दूसरा एक अन्य महत्वपूर्ण सूचकांक है एस. खण्ड पी.सी. सूचकांक जिसे सामान्यतः निपटी के नाम से भी जाना जाता है। यह नेशनल स्टॉक का मुख्य सूचकांक है जिसमें लगभग 20 अलग-अलग क्षेत्रों में 50 शेयर्स शामिल हैं। एन.सी.ई. पर होने वाले कुल कारोबार का 65 से 70

प्रतिशत कारोबार निफ्टी शेयरों में ही होता है।

सेंसेक्स व निफ्टी के शेयरों की सूची आपको इनकी वेबसाइट पर मिल जाती है। शेयर खरीदने और बेचने से पहले - शेयर खरीदने या बेचने से पहले आपको डी.पी. के पास अपना डीमैट खाता खोलना होगा, जैसा कि पहले बताया गया है। बी.एस.ई. व एस.एस.ई. पर केवल डीमैट प्रतिभूतियों का ही कारोबार होता है।

जब आप शेयर खरीदते हैं तो उसका कॉन्ट्रैक्ट यानी सौदे की पुष्टि मिलते ही आपको ब्रोकर या सब-ब्रोकर को पैसे देने की आवश्यकता होगी। ब्रोकर कॉन्ट्रैक्ट शीट जारी करता है और सब-ब्रोकर कन्फर्मेशन मेमो। इसी तरह शेयर बेचने पर भी आपको कॉन्ट्रैक्ट शीट का कन्फर्मेशन मिलते ही आपको शेयर अपने ब्रोकर या सब-ब्रोकर के डीमैट खाते में जमा कराने होंगे। जब आप शेयर खरीदते हैं तो शेयर पहले ब्रोकर के डीमैट खाते में आते हैं। इसके बाद आप उसे अपने डीमैट खाते के विवरण के साथ शेयरों को आपके खाते में जमा कराने के निर्देश दे सकते हैं।

जब आप शेयर बेचते हैं तो अपने डी.पी. को निर्देश देकर आप ये शेयर अपने डीमैट खाते से निकालकर अपने ब्रोकर के खाते में जमा कराते हैं। इसके लिए डी.पी. की इंस्ट्रक्टर स्लिप देते समय उसमें ब्रोकर के डीमैट खाते का विवरण भी शामिल कर लिया जाता है। यह निर्देश देने की प्रणाली थोड़ी जटिल होती है व सभी डी.पी. अलग-अलग

प्रणाली का उपयोग करते हैं, अतः इस संबंध में अपने ब्रोकर की मदद लें।

ब्रोकर को निर्देश देना

शेयरों का सौदा करने के लिए आप अपने ब्रोकर या सब-ब्रोकर को मुख्य रूप से तीन तरह का निर्देश दे सकते हैं -

1. फिक्सड प्राइज ऑर्डर या लिखित ऑर्डर
2. स्टॉप लॉस ऑर्डर
3. मार्केट ऑर्डर

1. फिक्सड प्राइज ऑर्डर (Fixed Price Order) -

फिक्सड प्राइज ऑर्डर वह निर्देश होता है जिससे आप एक तय मूल्य पर शेयर खरीदने या बेचने का निर्देश देते हैं। आमतौर पर निवेशक ब्रोकर कम्प्यूटर पर दिखाई दे रहे चालू भाव से थोड़ा ऊपर या थोड़ा नीचे ही भाव तय करते हैं। मार्केट ऑर्डर की अपेक्षा फिक्स प्राइज ऑर्डर से आप शेयरों के दाम में उतार-चढ़ाव की अनिश्चितता से बच सकते हैं। यह निर्देश बड़े सौदों के लिए या फिर उन शेयरों के लिए ज्यादा उपयुक्त रहता है, जिनमें आमतौर पर कारोबार नहीं होते। अगर आप किसी पूर्व निर्धारित दाम पर शेयर खरीदना या बेचना चाहते हैं तो फिक्सड प्राइज ऑर्डर का उपयोग कर सकते हैं।

2. स्टॉप लॉस ऑर्डर (Stop Loss Order) - इस निर्देश में निवेशक एक तय दाम के साथ ब्रोकर के कम्प्यूटर में एक अन्य दाम भी निर्धारित करता है, जिस ट्रिगर प्राइज कहते हैं। जैसे ही बाज़ार में शेयर का भाव इस ट्रिगर प्राइज तक पहुंचता है, आपका ऑर्डर सक्रिय हो जाता है। यह ट्रिगर प्राइज ऑर्डर देते समय बाज़ार में चल रहे भाव से अधिक या कम होनी चाहिए। जो व्यापारी या सट्टेबाज अपना नुकसान सीमित रखना चाहते हैं या पूर्व निर्धारित स्तर पर लाभ कमाना चाहते हैं, वे स्टॉप लॉस ऑर्डर का प्रयोग करते हैं। बाज़ार में उतार-चढ़ाव की परिस्थितियों में यह उपयोगी साबित हो सकता है -

- a. अगर आप एक व्यापारी हैं, जिसने शेयर खरीदे या बेचे हैं, पर बाज़ार की उल्टी दिशा में चलने की स्थिति में अपने को नुकसान से बचाना चाहते हैं - ऐसे में आप स्टॉप लॉस ऑर्डर का उपयोग अपना नुकसान सीमित करने के लिए कर सकते हैं।
- b. यह उन निवेशकों के लिए भी उपयोगी है, जो शेयर खरीदने या बेचने के बाद बाज़ार भाव पर नज़र नहीं रख पाते।
- c. अगर तकनीकी विश्लेषण आपको बताता है कि कोई विशिष्ट स्तर पर करने के बाद शेयर के

भाव में तेज़ी या मंदी आने की संभावना है, तो उप स्टॉप लॉस ऑर्डर की सदस्यता से शेयर को वह पूर्व निर्धारित स्तर पार करने के बाद ही खरीद व बेच सकते हैं। बहुत से व्यापारी इस ऑर्डर का उपयोग तब करते हैं, जब उनके विश्लेषण के अनुसार एक पूर्व निर्धारित स्तर पर करने के बाद शेयर का भाव तेज़ी से बढ़ेगा या गिरेगा।

3. मार्केट ऑर्डर (Market Order) - इस ऑर्डर का उपयोग तब किया जाता है जब शेयर दलाल के कम्प्यूटर पर देखे गए बाज़ार में भाव पर अपने शेयर खरीदने या बेचना चाहते हों।

उदाहरण के लिए मान लीजिए, आप किसी कम्पनी में 100 रुपए खरीदने के लिए ब्रोकर को मार्केट ऑर्डर देते हैं। अब मान लीजिए कि कम्प्यूटर आपको दिखाता है कि बाज़ार में चल रहे 40 रुपए प्रति शेयर भाव पर केवल 60 शेयर उपलब्ध हैं, शेष 40 शेयर बेचने वाले कुछ अन्य लोग 42 रुपए प्रति शेयर मांग रहे हैं। इस स्थिति में ब्रोकर आपके लिए 60 शेयर 40 रुपए के भाव पर और 40 शेयर 42 रुपए के भाव पर खरीदेगा। बाज़ार में बहुत अधिक उतार-चढ़ाव के समय या किसी बड़े सौदे के समय इस प्रक्रिया का पालन नहीं करें तो बेहतर है। यह उन शेयरों के लिए भी उपयुक्त नहीं है, जिनकी बाज़ार में बहुत कम मांग है।

मार्केट ऑर्डर का उपयोग तभी करें, जब आप ज़ल्दी में कोई शेयर खरीदना अथवा बेचना चाहते हों और सौदे के भाव को लेकर अधिक चिंतित न हों।

प्रारंभिक दस्तावेज (Immetual Documents)

अपना कारोबार किसी ब्रोकर के साथ शुरू करने से पहले आपको खाता खोलने के लिए दो फार्म भरने होंगे -

1. क्लाइंट इंट्रोकट्री फार्म।
2. ब्रोकर क्लाइंट एग्रीमेंट।

इन्हें भरने में आपका ब्रोकर मदद करेगा। इसके लिए आपको अपना नाम, पता, आयकर, पैन नंबर, बैंक खाते का विवरण आदि देना होगा। इन दोनों फार्मों का प्रारूप सेबी द्वारा तय किया गया है। देश में इकिवटी कल्चर को विकसित करने में शेयर बाज़ार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुंबई शेयर बाज़ार में रोजाना लगभग 2500 कम्पनियों की ट्रेडिंग होती है।

ट्रेडिंग सेटलमेंट (Trading Settlement)

शेयर बाज़ार में फिलहाल टी प्लस टू नियम से आवश्यक रोलिंग सेटलमेंट होता है। विश्व में काफ़ी कम देशों के शेयर बाज़ारों के पास टी प्लस टू सेटलमेंट की प्रक्रिया होने से आज विश्व में भारतीय शेयर बाज़ार की गणना अति

आधुनिक शेयर बाज़ारों में की जाती है। टी प्लस टू सेटलमेंट प्रक्रिया के तहत निवेशकों को बेचे गए या खरीदे गए शेयरों की डिलीवरी या पेमेंट शीघ्रता से कराने का उद्देश्य रहता है। टी प्लस टू सेटलमेंट के अंतर्गत ट्रेडिंग के हर तीसरे दिन शेयरों का पे-इन और पे-आउट हो जाता है। देश में शेयरों में डीयेटेरियलाइजेशन (डीमेट) कारोबार के कारण सेटलमेंट प्रक्रिया तेज़ करने में शेयर बाज़ार सफल हुआ है।

नीलामी प्रक्रिया (Auction Process)

त्वरित सेटलमेंट प्रक्रिया के साथ डीमेट सुविधा भी विकसित करने से शेयरों की संख्या नियंत्रित रही है। पे-इन की निर्धारित तारीख तक यदि कोई निवेशक अपने दलाल से शेयरों की डिलीवरी पाने में सिफल हो तो आवश्यक नीलामी प्रक्रिया शुरू की जाती है, इसलिए निवेशकों के लिए समय पर शेयरों की डिलीवरी देना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

सर्किट ब्रेकर (Circuit Breaker)

शेयर बाज़ार में किसी स्क्रिप में असाधारण घट-बढ़ हो तो उसके उछाल अथवा गिरावट को सीमित करने के लिए सर्किट ब्रेकर का उपयोग किया जाता है। सर्किट ब्रेकर की सीमा 2 से 20 प्रतिशत तक रहती है। हालांकि डेरिवेटिव्स

सेगमेंट में समाविष्ट स्क्रिप्स को इससे मुक्त रखा गया है।
शेयर बाज़ार समय-समय पर परिस्थितियों को ध्यान में
रखकर सर्किट ब्रेकर में फेरबदल करता रहता है।

शेयर का चयन

यह देखा गया है कि निवेशक शेयर बाज़ार में पूंजी लगाने से पहले टिप्स या सलाह अवश्य चाहते हैं। ऐसे बहुत ही कम निवेशक होंगे जो स्वयं बिना किसी मशाविरे के निवेश करते होंगे। इसी के मद्देनज़र यहां कुछ टिप्स दिए जा रहे हैं, जो निवेश के समय ध्यान में रखे जाने चाहिए।

साधारण आर्थिक ट्रेंड

सर्वप्रथम टॉप-डाउन अप्रोच में हम साधारण अर्थव्यवस्था पर एक नज़र डालते हैं। अर्थव्यवस्था एक सागर की लहर की तरह है जबकि विभिन्न औद्योगिक समूह और व्यक्तिगत कम्पनियां नावों के समान हैं। अर्थव्यवस्था में जब तेज़ी आती है तो ये समूह व कम्पनियां लाभ कमाती हैं और अर्थव्यवस्था के उतार के दौरान ये कम्पनियां व समूह नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं।

समूह का चुनाव

बाजार में औद्योगिक समूह की सक्रियता को निर्धारित करने के लिए निवेशक विकास दर, मार्केट साइज़ और अर्थव्यवस्था के महत्व का विश्लेषण जरूर करना चाहेगा। जैसे-जैसे शेयर उत्तरते-चढ़ते रहते हैं, वैसे-वैसे वह समूह भी उतार-चढ़ाव से गुज़रता रहता है, जो निवेशक को प्रभावित करता है।

चुनिए सर्वश्रेष्ठ

ग्रुप का चुनाव करने के बाद निवेशक को समूह की विभिन्न कम्पनियों का विस्तार से विश्लेषण करना चाहिए। निवेशक को उन कम्पनियों का चुनाव करना चाहिए, जो अपने सेक्टर में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें। इस प्रकार की कम्पनियों में उन कम्पनियों को शुमार किया जा सकता है जो अपने विस्तार को लेकर सदैव आश्वस्त रही हों। इसमें वे कम्पनियों भी हो सकती हैं जो नए प्रबंधन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयासरत हैं। एक निवेशक उन कम्पनियों की भी छानबीन कर सकता है, जो बड़े स्तर पर और तकनीकी सहयोग से अपना लाभ बढ़ाने के लिए संयुक्त कार्य करने जा रही हों। आपको सबसे पहले कम्पनी या समूह के व्यवसाय, प्रतियोगी वातावरण एवं भविष्य की योजनाओं को समझना चाहिए।

कम्पनियों का रैंक किस प्रकार मार्केट शेयर, उत्पादन और प्रतियोगी प्रतिस्पर्धाओं द्वारा निर्धारित होता है, वर्तमान लीडर

कौन है? और एक शेयर में होने वाले बदलाव किस प्रकार वर्तमान संतुलन को प्रभावित करते हैं। किसी कम्पनी के प्रतियोगी वातावरण का अध्ययन सही और गलत कम्पनी के चुनाव को निर्धारित करता है।

निवेशक को प्रति शेयर मूल्य के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन भी करना चाहिए। सबसे पहले उन कम्पनियों का चुनाव करना चाहिए जो सकारात्मक आय के प्रति सदैव आश्वस्त हैं और जिनकी आय सकारात्मक रही हो। यह डाटा कम्पनियों के वार्षिक डाटा सेक्षण से प्राप्त किया जा सकता है।

वार्षिक विकास दर

कम्पनी के दीर्घकालीन लाभ के लिए विकास दर आधार का कार्य करती है। इसे कुछ इस प्रकार समझा जा सकता है। यदि चालू वित्त वर्ष का लाभ पहले 5 सालों की अपेक्षा दोगुना हो तो इसका अर्थ है कि विकास दर 15 प्रतिशत सालाना की दर से बढ़ रही है। इस प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन औद्योगिक समूह की औसत से भी किया जा सकता है।

हानि-लाभ का मूल्यांकन

निवेशक कंपनी या फर्म की तिमाही बिक्री ओर प्रति शेयर बिक्री के परिणाम का पिछली तिमाही से तुलनात्मक

अध्ययन करने पर लाभ या हानि के परिणाम तक पहुंच सकता है। तिमाही हानि किसी भी कम्पनी के भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं हो सकती और निवेशक को इस हानि के कारणों को जानने का प्रयास करना चाहिए।

लाभ मात्रा प्रवृत्ति (प्रोफिट मार्जिन ट्रेंड)

निवेशक जिस कम्पनी या फर्म के शेयर में निवेश करना चाहता है, उसे उस कम्पनी की शुद्ध लाभ मात्रा और उसकी प्रवृत्ति का भली-भांति अध्ययन कर लेना चाहिए। यदि आयकर की दरें अधिकांशतः स्थिर रही हैं तो इससे कर से पहले ही लाभ मात्रा प्रवृत्ति या ट्रैकस प्रोफिट मार्जिन का अच्छा अनुमान लग जाता है। कर से पहले के लाभ की मात्रा में अंतर सिर्फ़ कर की दर का होता है। वार्षिक लाभ एवं हानि खाता शुद्ध लाभ के ठीक पहले आयकर की दर दर्शाता है। यही दर यदि विगत पांच वर्षों में अधिकाशंतः स्थिर रही है, तो हम शुद्ध लाभ की मात्रा का पता लगा सकते हैं।

ऋण/इक्विटी

किसी भी कम्पनी का ऋण/इक्विटी अनुपात इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस इंडस्ट्री में कार्यरत है। उदाहरण के लिए पूंजी की बड़ी मात्रा पर निर्भर रहने वाले उद्योग जैसे ऑटो मैन्युफैक्चरिंग में यह अनुपात दो से ऊपर

होना अनुमानित है, जबकि व्यक्तिगत प्रयोग के लिए कम्प्यूटर वाली कम्पनी में 0.5 से नीचे। यदि कम्पनी की बढ़ी हुई गतिविधियों या कार्यक्षेत्र के लिए धन जुटाने के लिए अधिक ऋण लिया जाता है तो कम्पनी की आय इस ऋण के बिना होने वाली आय से अधिक होने की संभावना होती है। यदि इस ऋण फाइनेंसिंग से आय, ऋण की लागत (ब्याज) से बहुत अधिक मात्रा में बढ़ती है तो शेयर धारकों (शेयर होल्डर्स) को लाभ मिलता है, क्योंकि बढ़ी हुई आय उतने ही शेयर धारकों तक पहुंचती है। इसके विपरीत यदि ऋण फाइनेंसिंग की लागत इससे होने वली आय से अधिक हो जाती है तो कम्पनी के दिवालिया होने का खतरा उत्पन्न हो जाता है, जिसका असर आखिरकार शेयर धारकों पर ही पड़ता है।

प्रति शेयर आय (रिटर्न ऑन इक्विटी)

आर.ओ.आई. (रिटर्न ऑन इक्विटी) या प्रति शेयर आय शुद्ध लाभ (एन.पी.)। शेयर धारकों की औसत इक्विटी।

लेकिन, यह भी सत्य है कि सभी ऊंची आर.ओ.आई. वाली कम्पनियों की आर.ओ.आई. ऊंची होती है, लेकिन उनके पास संपत्ति (असेट्स) नहीं होती, जैसे कंसल्टिंग फर्म। जबकि कुछ इंडस्ट्रीज को लाभ का पहला पैसा कमाने से पहले ही बड़ी मात्रा में इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा करना होता है, जैसे तेल उत्पादक कम्पनियां या ऑयल रिफाइनर्स,

इसलिए केवल आर.ओ.ई. के आधार पर हम कंसल्टेंट फर्म को ऑयल रिफाइनर से बेहतर निवेश नहीं मान सकते। साधारणतया: ज्यादा पूँजी की आवश्यकता वाले उद्योग में शुरुआती गतिरोध ज्यादा होते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धा कम होती है। वहीं ऊंची आर.ओ.ई. वाली फर्म, जिसके असेट्स कम होते हैं, को ज्यादा प्रतिस्पर्धा का सामना करना होता है, क्योंकि कम पूँजी की ज़रूरत के कारण कोई भी वैसा ही कार्य शुरू कर सकता है। बावजूद इसके, अन्य आर्थिक अनुपात सूत्रों की तुलना में आर.ओ.ई. को तुलना के लिए सबसे बेहतर माना जाता है।

वृद्धि की दर (ग्रोथ रेट)

ग्रोथ रेट = रिटेंशन रेट = आर.ओ.ई.

ऊंची आर.ओ.ई. से शीघ्र लाभ नहीं होता है। चूंकि स्टॉक प्राइज को सबसे ज्यादा प्रति शेयर आय (ई.पी.एस.) प्रभावित करती है, इसलिए संभव है कि 20 प्रतिशत आर.ओ.ई. कम्पनी के लिए 10 प्रतिशत आर.ओ.ई. कम्पनी की तुलना में आय दो गुना (प्राइज/बुक टर्म्स में) दे रहे हों। लाभ हमें अधिक ऊंची दर पर आय के पुनर्निवेश से मिलता है, जो कम्पनी को और भी ऊंची वृद्धि दर दिलाता है। साधारणतया आर.ओ.ई. बेमतलब हो जाती है, यदि आय को पुनः निवेश नहीं किया जाए। दीर्घकालीन ग्रोथ मॉडलों में यह देखा गया है कि जो फर्म डिपीडेंट देती

हैं, उनकी आय में वृद्धि कम हो जाती है। उदाहरण के लिए यदि डिपीडेंट 20 प्रतिशत दिया जाता है तो अनुमानित वृद्धि आर.ओ.ई. का 80 प्रतिशत ही होगी।

आर.ओ.सी.ई.

आर.ओ.सी.ई. कम्पनी में निवेश की गई पूँजी की तुलना आय से करती है। यह संपत्ति पर आय (रिटर्न ऑन असेट्स) की तरह ही है, लेकिन इसमें फाइनेंसिंग के स्रोत को भी ध्यान में रखा जाता है। हर डिनोमिटनेटर में हमारे पास कुल संपत्ति के स्थान पर शुद्ध संपत्ति (नेट असेट्स) अथवा लगी हुई पूँजी होती है, जबकि अंश (न्यूमरेटर) में कर से पहले का कार्यरत लाभ या ई.बी.आई.टी. (प्री टैक्स ऑपरेटिंग प्रोफिट) होता है। लगी हुई पूँजी (कैपिटल एंप्लोइड) की कई परिभाषाएं होती हैं। साधारण रूप से इसे उद्योग को सुचारू रखने के लिए जरूरी पूँजी के रूप में किया जाता है। लोकप्रिय रूप में इसे कुल संपत्ति में से चालू दायित्व अथवा अचल संपत्ति एवं चालू पूँजी को घटाकर आए मान के रूप में किया जाता है। इसको हम लगी हुई = कुल संपत्ति - चालू दायित्व अथवा अचल संपत्ति + चालू पूँजी के फार्मूले के रूप में व्यक्त कर सकते हैं।